For Immediate Release:
21 February 2017

Contact:
Nikunj Sharma +91 9910397382; NikunjS@petaindia.org
Shambhavi Tiwari +91 9167907382; ShambhaviT@petaindia.org

ब्रेकिंग : पड़ताली वीडियो में हुआ खुलासा, भारत की प्रमुख पोल्ट्री कंपनियां चूजों को जलाती हैं, डुबोती हैं, कुचलती हैं

पीटा इंडिया अंडा व माँस उद्योग में प्रचलित क्रूर कार्यप्रथाओं में व्यापक परिवर्तन का आह्वान करती है – और जनता से शुद्ध शाकाहारी बनने का आग्रह करती है

हैदराबाद – आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की कई हैचरियों और फ़ार्मों में एनोनिमस फ़ॉर एनिमल राइट्स द्वारा संचालित और पीपुल फ़ॉर एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ़ एनिमल्स (पीटा) इंडिया द्वारा प्राप्त चश्मदीद पड़ताल से खुलासा हुआ है कि लाखों–करोड़ों नर चूजों, जो अंडा उद्योग के लिए किसी काम के नहीं हैं, को और अन्य अवांछित चूजों को पीस दिया जाता है, डुबोया जाता है, जलाया जाता है, कुचल दिया जाता है, कूड़ेदानों में फेंक दिया जाता है, यहां तक कि जिंदा हालत में ही दूसरे जानवरों को खिला दिया जाता है, और ऐसा भारतीय अंडा व माँस उद्योग के शीर्ष खिलाड़ियों के यहां भी होता है.

पड़ताली वीडियो का वर्णित व अवर्णित रूपांतर तथा विस्तृत रिपोर्ट यहां देखें और डाउनलोड करें. वीडियो फुटेज का वर्णित रूपांतर भी यहां देखा जा सकता है और एक विचित्र अवर्णित रूपांतर यहां देखा जा सकता है.

चश्मदीद गवाहों ने निम्नांकित बिंदु दस्तावेज़ीकृत किए :

- इनक्यूबेटरों में हैचिंग (सेये जाने) से चूजों में विकृतियां उत्पन्न होती हैं, जैसे उनके अंगों का बाहर निकल आना.
- चूजों का लिंग पता करने के लिए कर्मचारी उनके संवेदनशील जननांगों को जोरों से दबाते हैं.
- अंडा उद्योग में आमतौर पर चूजों व मुर्गे–मुर्गियों को बेहद तंग जगहों में ठूंस कर रखा जाता है, इस कारण से वे हताशा से ग्रस्त होकर एक–दूसरे को चोंच मारते हैं. वे ऐसा न कर पाएं इसके लिए चूजों को एनेस्थेटिक दिए बिना ही उनकी चोंच के बड़े हिस्से को जला डालने वाले गर्म ब्लेड से काट दिया जाता है.
- अवांछित चूजों को जिंदा हालत में ही अंडों के छिलकों और मृत पक्षियों के साथ पिसाई की मशीनों में फेंक दिया जाता है.
- उन्हें पानी से भरी टंकियों में भी डुबो दिया जाता है जहां वे आधे–आधे घंटे तक खुद को बचाने के लिए संघर्ष करते हुए आखिर में डूब कर मर जाते हैं.
- कुछ को जलती आग में फेंक कर जला कर मार दिया जाता है.
- कुछ अन्य को कुचल दिया जाता है या बड़े–बड़े ड्रमों या ट्रकों में बड़ी संख्या में ठूंस कर उनका दम घोंट दिया जाता है.
- कर्मी चूजों को मछली पालन के तालाबों में भी पहुंचा आते हैं जहां उन्हें तालाब में फेंक दिया जाता है जहां वे जिंदा हालत में ही मछलियों द्वारा खाल लिए जाते हैं, और अगर वे बच कर भागने की कोशिश करते हैं तो उन्हें फिर से पानी में फेंक दिया जाता है.

इन क्रूरताओं की प्रतिक्रिया में, पीटा आम जनता से आग्रह करती है कि वह शुद्ध शाकाहारी होने के विकल्प को अपनाए और सरकार से यह आह्वान करती है कि वह नयी *इन ओवो* सैक्सिंग टेक्नोलॉजी पर विचार करे. इसमें अंडों के सेये जाने से पहले ही चूजों का लिंग निर्धारित हो जाता है. इससे नर चूजों की बड़े पैमाने पर होने वाली मृत्यु की रोकथाम होगी. पीटा सरकार से यह भी आग्रह करती है कि वह अस्वस्थ चूजों के लिए दर्दहीन इच्छा मृत्यु का एक लिखित मानक स्थापित व लागू करे और चूजों को क्रूर तरीकों से मारने वाली कंपनियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करे.

PEOPLE FOR
THE ETHICAL
TREATMENT
OF ANIMALS

PETA India
PO Box 28260
Juhu, Mumbai
400 049
(22) 4072 7382
(22) 2636 7383 (fa

Info@petaindia.org
PETAIndia.com

NEWS
RELEASE

Affiliates:
• PETA US
• PETA Foundation (UK)
• PETA Asia
• PETA Germany
• PETA Netherlands

Registered Office:
H-341, Ground Floor
New Rajendra
Nagar, New Delhi
110 066

पीटा इंडिया की सीईओ पूर्वा जोशीपुरा का कहना है, ''क्षत-विक्षत मुर्गियों को तंग दड़बों में ठूंसने से लेकर जिंदा चूज़ों को पीसने, डुबोने और जला देने तक, अंडा व माँस उद्योग में क्रूरता अंधाधुंध ढंग से प्रचलित है.पीटा का संदेश यह है कि हमारे भोजन के लिए किसी पशु को तकलीफ़ न पहुंची हो यह सुनिश्चित करने का सिर्फ एक ही तरीका है कि हम शुद्ध शाकाहारी बन जाएं.''

जैसा कि वीडियो में देखा जा सकता है, चश्मदीद गवाहों ने बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा इस्तेमाल होने वाली विभिन्न हत्या विधियों को दस्तावेज़ीकृत किया है. इन बड़ी कंपनियों में शामिल हैं डायमंड ग्रुप; सुगुना फ़ूड्स, जो पोल्ट्री सेक्टर में एक जाना-माना नाम है और माँस हेतु मुर्गियों के उत्पादन में भारत में पहले नंबर पर है; एसएच ग्रुप, जिसकी फ़्लैगशिप कंपनी श्रीनिवास हैचरीज़ लिमिटेड के पास, उसकी वेबसाइट के मुताबिक, अपने प्रचालन के क्षेत्र में पोल्ट्री सेक्टर के लेयर बाजार में ९५% हिस्सा है; और एसआर ग्रुप, जिसका माँस उद्योग हेतु मुर्गियों का उत्पादन ६०,००,००० प्रति माह पर है, और उसके ब्रीडर फार्म हाउस में ५,००,००० मुर्गियां हैं. वीडियो में वेंकटेश्वर हैचरीज़ प्रा. लि. जिसे आम तौर पर वेंकीज़ कहा जाता है, द्वारा सेक्सिंग प्रेक्टिसेज को दिखाया गया है. साथ ही स्काईलार्क ग्रुप जो भारत में सबसे अधिक पोल्ट्री उत्पादकों में से एक हैं, के स्काईलार्क हैचरीज़ प्रा. लि. ट्रांसपोर्ट में टुकड़े किये चिक्स भी होते हैं.

अधिक जानकारी के लिए कृपया **PETAIndia.com** पर पधारें.

#

PEOPLE FOR
THE ETHICAL
TREATMENT
OF ANIMALS

PETA India
PO Box 28260
Juhu, Mumbai
400 049
(22) 4072 7382
(22) 2636 7383 (fa

Info@petaindia.org
PETAIndia.com

NEWS RELEASE

Affiliates:
- PETA US
- PETA Foundation (UK)
- PETA Asia
- PETA Germany
- PETA Netherlands

Registered Office:
H-341, Ground Floor
New Rajendra
Nagar, New Delhi
110 066